IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक विद्यालयें के अध्यापकों की जागरूकता का समीक्षात्मक अध्ययन

पर्यवेक्षक
श्रीमती डॉ आभा शर्मा प्राचार्या
एम् जे आरपी कॉलेज ऑफ एजुकेषन
अचरोल जयपुर राजस्थान

शोधार्थी
डॉ निखिल चतुर्वेदी
एम एड छात्र

शोध का शीर्षक

अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक विद्यालयें के अध्यापकों की जागरूकता का समीक्षात्मक अध्ययन

1.1 प्रस्तावना

बाल्यावस्था मनुष्य जीवन की प्रथम अवस्था है और प्रत्येक मानव जीवन के उद्देश्यों का निर्धारण इसी बाल्लयलावस्था से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे उस पुष्य की भांति होते है। जिसे सही ढंग से रोशनी पानी हवा आधार प्राप्त होता है तो वह खिलकर अपनी सुवास से सम्पूर्ण वातावरण को महकाता है और यदि उस पुष्प को दोहन किया जाये तो वह कुछलकर नष्ट हो जाता है। वर्तमान में भौतिकवादी संस्कृति मनुष्य पर प्रबल रूप से अपना प्रभाव जमा चुकी है। इसी भौतिकवादी संस्कृति व कुत्सित विचारधारा ने छोटे छोटे बच्चों को भी अपनी चपेट में ले लिया है।

सन् 2014 में लगभग 60: मामलें पूरे देश में से सामने आयें। बच्चों के साथ होने वाले यौन शोषण ना केवल लड़कियों के साथ अपितु लड़कों के साथ भी घटित होते हैं। इसमें 9 वर्ष तक की आयु के लड़कों के साथ हुए यौन शोषण के लगभग 45: मामले सामने आते हैं।

[3]एक सर्वे के अनुसार 45,000 से ज्यादा 12–18 साल के बच्चें जो कि देश के 26 राज्यों से थे यौन शोषण का शिकार बने। यह तथ्य यह उजागर करता है कि हर 2 में से 1 बच्चा यौन हिंसा से पीड़ित होता है। मानवीय सहायता संगठन भारतीय दृष्टिकोण नामक संस्था ने लगभग 45,844 बच्चों पर सर्वे किया जिससे पाया गया कि हर पाँच में से एक बच्चा यौन शोषण के भय से ग्रसित रहता है और हर चार में से एक परिवार बाल यौन शोषण की शिकायत ही दर्ज नहीं करवाते।

ऐसे में शिक्षकों की भूमिका क्षेत्र में अधिक बढ जाती है क्यंकि बच्चो को अच्छे व बुरे स्पर्श के मध्य सार्थक भेद बताने तथा उन्हें बाल अधिकरों के प्रति सचेत करने हेतु एक शिक्षक का दायित्व अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षक भी अपने विद्यार्थियों को तभी जागरूक कर सकता हे जब वह स्वयं इस विषय को लेकर सचेत व म्भीर हो तथा जागरूक हो। क्योंकि यदि शिक्षक अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति जागरूक तथा गम्भीर होगा तभी वह विद्यार्थियों की सुरक्षार्थ विभिन्न उपाय अपना सकेगा तभी उन्हें जागरूक कर सकेगा।

अतः शोधकर्ता के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न नहीं हुई कि अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं की जागरूकता का समीक्षात्मक अध्ययन कर कुछ निष्कर्ष निकाले जाऐ।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर पर निजी विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं में जागरूकता का अध्ययन करना।
2. अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर पर केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं में जागरूकता का अध्ययन करना।
3. अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर पर निजी व केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर का अध्ययन करना।
4. अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (केन्द्रीय/निजी) में जागरूकता का अध्ययन करना।

[3] https://www.google.com

1.5 परिकल्पना :–

1. अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर पर निजी विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं में जागरूकता पाई जाती है।
2. अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर पर केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं में जागरूकता पाई जाती है।
3. अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर पर निजी व केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
4. अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (केन्द्रीय/निजी) में जागरूकता पाई जाती है।

अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य की समस्या को भली–भाँति समझकर, अध्ययन से सम्बनधित साहित्य का अवलोकन कर अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन शोधकर्ता द्वारा किया जायेगा।

अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित मापनी व संरचित साक्षात्कार का उपयोग करेगा।

प्रदतों का संचयन

शोध में शिक्षक शिक्षिकाओं की अचछे व बुरे स्पर्श सम्बन्धी जागरूकता से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्र करने हेतु शोधकर्ता ने जयपुर शहर में न्यादर्श को रूप में निम्न का चयन किया। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध 0 प्राथमिक स्तर के 3 केन्द्रीय व 3 निजी विद्यालयों से क्रमशः 50 शिक्षक शिक्षिकाऐं 10 बच्चे व 50 शिक्षक शिक्षिकाएं व 10 बच्चों का चयन किया है।

अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक विद्यालयें के अध्यापकों की जागरूकता का समीक्षात्मक अध्ययन

	अध्यापकों की संख्या	विद्यार्थियों की संख्या
केन्द्रीय विद्यालय	50	10
निजी विद्यालय	50	10

परिकल्पना – 1

अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति निजी विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं में जागरूकता पाई जाती है।

सारणी– 4.1

	शिक्षक शिक्षिकाओं की संख्या	प्रतिशत
निजी विद्यालय के शिक्षक	22	70.58:
निजी विद्यालय की शिक्षिका	28	

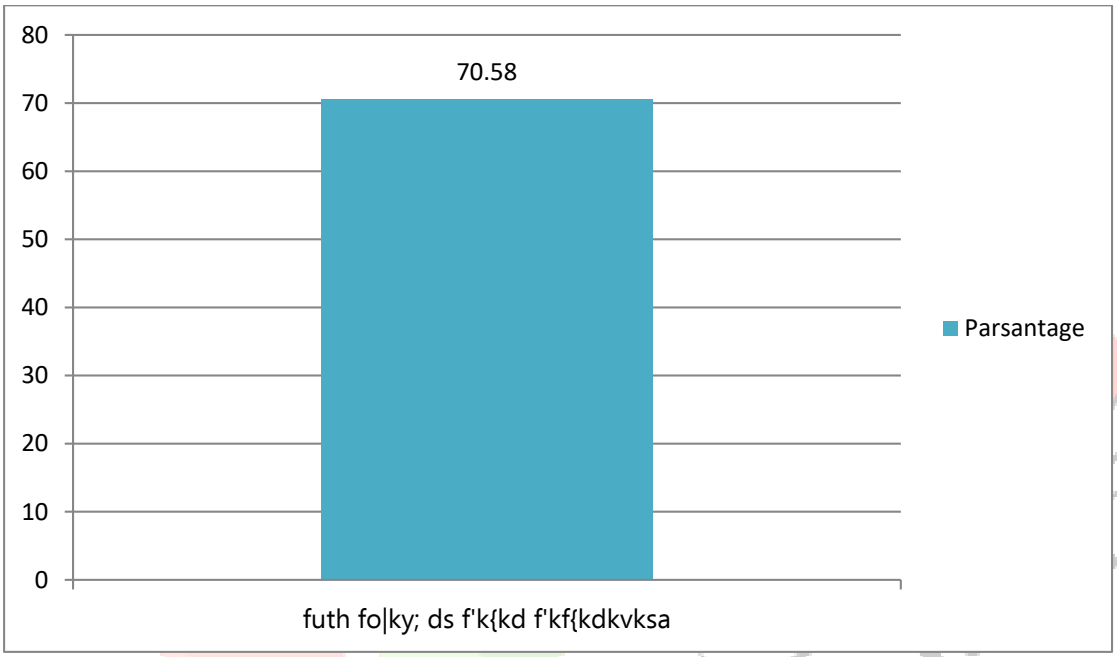

विश्लेषण एवं व्याख्या –

शोधकर्ता द्वारा निर्धारित परिकल्पना अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति निजी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की जागरूकता का अध्ययन करना था। इस परिकल्पना की प्राप्ति हेतु निजी विद्यालय के 50 शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन किया गया है जिसमें अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति उनकी जागरूकता का प्रतिशत 70.58: रहा। इसका कारण शिक्षकों की अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति चेतना, स्पर्श के ज्ञान हेतु विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन, मीडिया, मोबाइल, पत्र–पत्रिकाओं इत्यादि के द्वारा अच्छे व बुरे स्पर्श सम्बन्धी जानकारी लेना तथा उनका स्वयं इस विषय को लेकर सचेत होना इत्यादि हो सकते है।

परिकल्पना – 2

अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं में जागरूकता पाई जाती है।

सारणी– 4.2

	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशत
केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक	24	67.64:
केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षिका	26	

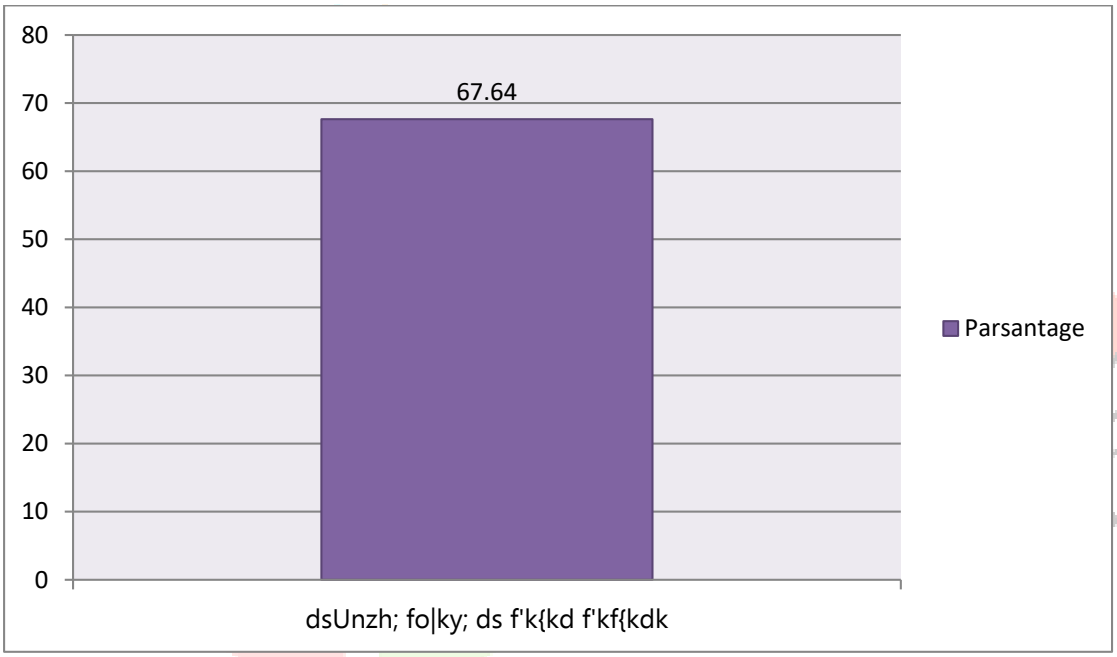

विश्लेषण एवं व्याख्या –

शोधकर्ता द्वारा निर्धारित परिकल्पना अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति केन्द्रीय प्राथमिक विद्यालयों की जागरूकता का अध्ययन करना था। इस परिकल्पना की प्राप्ति हेतु केन्द्रीय विद्यालय के 50 शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन किया गया जिनका अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति जागरूकता प्रतिशत 67.64 रहा। जिससे स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं में जागरूकता पाई जाती है। इसका कारण रहा कि विद्यालय में स्पर्शों की जागरूकता हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का चलाया जाना तथा सरकारी सुरक्षा मापदण्डों का पालन करना। इसके अलावा सोशल मीडिया का भी प्रयोग करना रहा है।

परिकल्पना – 3

अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति निजी व केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं की जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी–4.3

	अध्यापकों की संख्या	प्रतिशत
निजी विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिका	50	70.58:
केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिका	50	67.64:

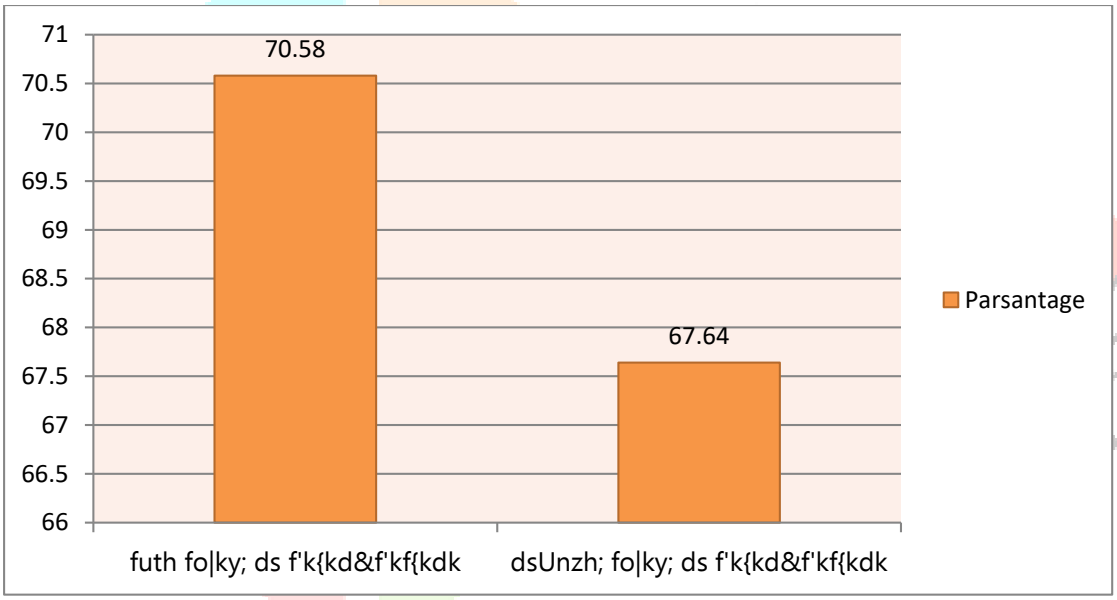

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधकर्ता द्वारा निर्धारित परिकल्पना अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति केन्द्रीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं जागरूकता के सार्थक अन्तर का अध्ययन करना था। इस परिकल्पना की प्राप्ति हेतु केन्द्रीय व निजी विद्यालय के 100 शिक्षक–शिक्षिकाओं का चयन किया गया है जिनका अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति जागरूकता प्रतिशत क्रमशः 67.64 तथा 70. 58: रहा। जिससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि केन्द्रीय की अपेक्षा निजी विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाएँ इस विषय में अधिक जागरूक पाये गये। इसका एक प्रमुख कारण निजी विद्यालय द्वारा अत्याधुनिक तकनीकों व प्रविधियों का प्रयोग कर अच्छे व बुरे स्पर्श सम्बन्धी जागरूकता देना तथा प्रभावशाली विद्यालयी उपाय अपनाना तथा स्वयं को इस विषय को

लेकर गंभीर होना हो सकता है। इसके अलावा केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं का इसी विषय की तरफ अधिक ध्यान ना देना क्योंकि वे प्रायः स्वयं की नौकरी में स्थाथित्व को लेकर निश्चित होते है। यह भी एक कारण हो सकता है। अतः केन्द्रीय विद्यालय के शिक्षक–शिक्षिकाओं को इस विषय में ओर अधिक जागरूक करने तथा ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे वे विद्यालय में बच्चों को अधिक से अधिक जागरूक कर सके।

परिकल्पना – 4

अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (केन्द्रीय/निजी) में जागरूकता पाई जाती है।

सारणी–4.4

	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थी	10	94:
निजी विद्यालय के विद्यार्थी	10	98:

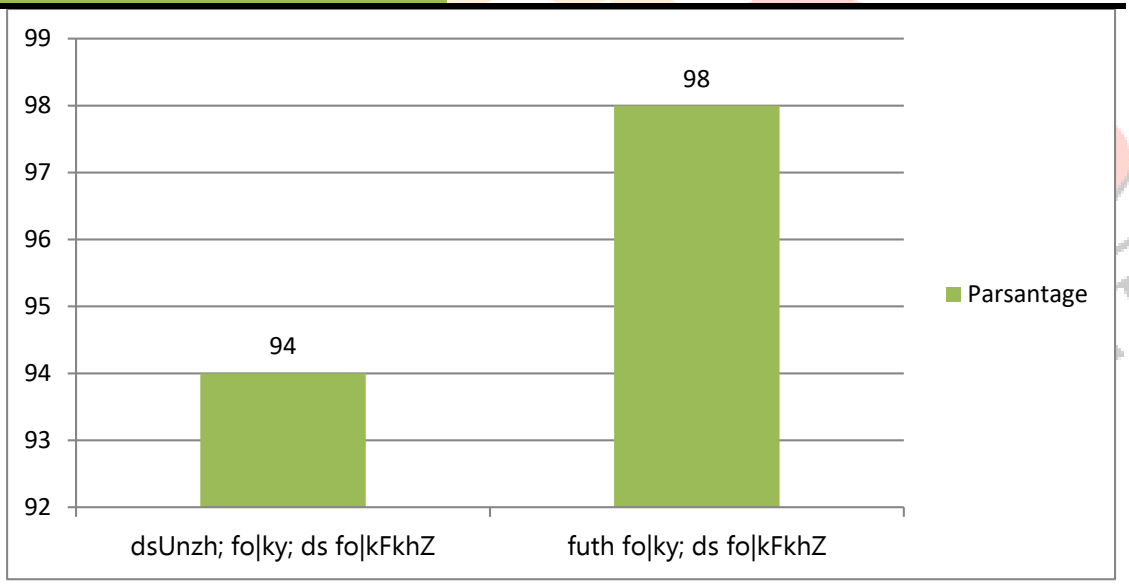

विश्लेषण एवं व्याख्या –

शोधकर्ता द्वारा निर्धारित परिकल्पना अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता का समीक्षात्मक अध्ययन करना था। इस परिकल्पना की प्राप्ति हेतु निजी व केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिससे निजी विद्यालय के विद्यार्थियों 98: तथा केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों 94: अच्छे व बुरे स्पर्श के प्रति जागरूकता पाई जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

विद्यार्थियों हेतु उपयोगिता –

- प्रस्तुत लघु शोध से विद्यार्थियों को स्वयं के प्रति स्पर्शों की जागरूकता का ज्ञान हो सकेगा।
- विद्यार्थी अच्छे व बुरे स्पर्श के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा यौन शोषण से स्वयं की रक्षात्मक प्रणाली का विकास कर सकेंगे।

शिक्षकों हेतु उपयोगिता –

- प्रस्तुत लघु शोध द्वारा शिक्षकों की अच्छे व बुरे स्पर्श संबंधी जानकारी के बारे में पता चल सकेगी।
- शोध के द्वारा शिक्षकों की यौन शोषण पीड़ित बच्चों के साथ संव्यवहार की मानसिकता पता चल सकेगा।

विद्यालय हेतु उपयोगिता –

- प्रस्तुत लघु शोध द्वारा विद्यालयों में बच्चों की सुरक्षार्थ अपनाये जाने वाले उपायों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
- शोध के द्वारा प्राप्त परिणामों से विद्यालय प्रबंधन स्वयं द्वारा अपनाये जाने वाले उपायों का विश्लेषण कर नवीन उपायों का सृजन कर सकेंगे।

समाज हेतु उपयोगिता –

- प्रस्तुत लघु शोध द्वारा बच्चों व शिक्षकों की स्पर्श के प्रति जागरूकता पता चलेगी जिससे बच्चे यौन शोषण से सुरक्षित रखने में सहायता मिलेगी। समाज की प्रगति हेतु बच्चों का भविष्य सुरक्षित रहना आवश्यक है। अतः समाज के लिए यह लघु शोध उपयोगी होगा।

– शोध के द्वारा प्राप्त परिणामों से शिक्षकों की जागरूकता का पता लगाया जा सकेगा जिससे समाज में बाल यौन शोषण जैसी महामारी पर अकुंश लगाने में सहायता प्राप्त होगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल ए.एन. (2001):– भारतीय अर्थव्यवस्था–समस्याएं विकास योजना, विश्व प्रकाशन न्यू दिल्ली अंक 27 पृ.सं. 133–153।
- अग्रवाल जे.सी. (2005) :– शिक्षा मनोविज्ञान आगरा विजय प्रकाशन मंदिर।
- अस्थाना एवं अस्थाना (2005) :– मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।
- आयोग, पी. (2006) :– कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण भारत सरकार।
- भार्गव महेश (2004) :– शैक्षिक मापन एवं मूल्याकंन एच.पी. डिस्ट्रीब्यूशन, आगरा।
- भार्गव महेश (2010) :– आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन आगरा एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।